नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 02.02.2019

प्रकाशनार्थ

विज्ञान ने आज कल्पनाएँ साकार की हैं। धरती–आकाश–पाताल तक की दूरी विज्ञान माप रहा है। वह नित–नूतन नए आविष्कार कर रहा है। विज्ञान ने मानव इच्छाओं के पर लगा दिए है। उड़ती कारो, अन्तरिक्ष कालोलियों, चन्द्रमा और मंगल पर मानव घर, रोबोट द्वारा मानव–जनित कार्यों का विकल्प, मानव क्लोन, मानव–रहित विमानों, कृत्रिम वर्षा, कृत्रिम धूप, निर्मूल बिमारियों, नाभकीय ऊर्जा–सौर्य ऊर्जा – सौर्य ऊर्जा से धरती को ऊर्जा संकर से मुक्त करने, शुद्ध पर्यावरण हेतु विविध नवीन तकनीको विकास का वीं शताब्दी के विज्ञान का लक्ष्य है। दुनिया को सक्षम, सुन्दर और मानव–क्षमता के पूर्ण विकास से परिपूर्ण बनाने में लगे विज्ञान को अध्यात्म का सहारा मिल जाए तो हम एक ऐसी खूबसूरत दुनियॉ बनाएंगे जहाँ स्वर्ग की सभी परिकल्पनाएँ साकार होंगी। उक्त बाते महाराणा प्रताप पी. जी. कॉलेज जंगल धूसड़ गोरखपुर मे 'विज्ञान में नवीन प्रवृत्तियॉ' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप के अवसर पर मुख्य अतिथि इन्स्टीच्यूट ऑफ न्यूक्लिर मेडिसिन एण्ड एलाइड साइंसेस (DRDO) नई दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनन्त नारायण भट्ट ने कही। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. के सिंह ने कहा कि विज्ञान ने एक नयी दुनिया बनायी है। भारत की ज्ञान–विज्ञान की परम्परा आज पुनर्जीवित हो रही है। भारत के युवा वैज्ञानिक दृष्टि का विकास करें। विज्ञान का रचनात्मकता–सृजनात्मकता में उपयोग करें। भविष्य एक नए उदीयमान भारत का है। भारत दुनिया की उभरती महाशक्ति है। इक्कीसवीं शताब्दी में भारत ने तेजी से अपनी विकास यात्रा प्रारम्भ की है। भारत अपनी समृद्ध ज्ञान–परम्परा पर कार्य प्रारम्भ कर चुका है। भारत के युवा वैज्ञानिक अपनी पूरी क्षमता से भारत की नही बल्कि दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में कार्य कर रहे है। युग के अनुरूप विज्ञान में नित–नूतन नयी प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है।

मुख्यवक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी आई. टी. के प्रो. वी. रामानाथन ने कहा कि शोध विज्ञान की आत्मा है। शोध को परिणाम तक पहुॅचाने में तपस्या करनी होती है। उधर परिश्रम एवं वैज्ञानिक दृष्टि से विज्ञान की नवीन प्रवृत्तियों का अभ्युदय होता है।

प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा सफलता पूर्वक राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्पन्न होने पर सभी विद्वानों–वैज्ञानिको–शोधार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन संगोष्ठी के संयोजक एवं दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग की असि–प्रोफेसर डॉ. गीता सिंह ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन सचिव एवं बी. एच. यू. आई.टी. के युवा वैज्ञानिक श्री मनीष कुमार तिवारी ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 98 शोध–पत्रो पर विमर्श हुआ।

इस अवसर पर रसायन विज्ञान के पूर्व विभगाध्यक्ष प्रो. हरिजी सिंह, रसायन विभाग के अध्यक्ष प्रो. ओ. पी. पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. शीला मिश्रा, भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के प्रो. कमान सिंह, प्रो. विनय सिंह, प्रो. सत्यनारायण, प्रो. आर. पी. सिंह, डॉ. केशव सिंह, डॉ. दीपा श्रीवास्तव, डॉ. वी. के. बर्नवाल, डॉ. चन्द्रेश शर्मा आदि ने शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

इनके विशिष्ट व्याख्यान हुए

1. डॉ. ए. निनावे, पूर्व सलाहकार, बायोटेक्नालाज विभाग, भारत सरकार
2. प्रो. कमान सिंह, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ

क्रमशः.....2

3. प्रो. शीला मिश्रा, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
4. प्रो. डी. के सिंह, पूर्व अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
5. प्रो. आर. पी. सिंह, बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ
6. प्रो. हरिजी सिंह, पूर्व अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
7. प्रो. सुग्रीव नाथ तिवारी, पूर्व अध्यक्ष, भौतिकी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
8. प्रो. रविशंकर सिंह, आचार्य, भौतिकी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
9. प्रो. ओ. पी. पाण्डेय, अध्यक्ष रसायनशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संगोष्ठी विमर्श के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र

- वैदिक ज्ञान–विज्ञान और उसकी प्रासंगिकता
- पर्यावरण जागरूकता
- पर्यावरण की वैश्विक समस्या
- कचरा प्रबन्धन
- जैव विविधता तथा संरक्षण
- रासायनिक संश्लेषण
- चिकित्सा पद्धति में नए प्रयत्न
- आयुर्वेद में नवीन प्रयास और भविष्य दिशा
- स्वास्थ्य और योग
- अंतरिक्ष के क्षेत्र में नए प्रयत्न एवं उसकी दिशा
- प्रौद्योगिकी
- भविष्य का विज्ञान तथा मानव कल्याण

(डॉ0 राजेश शुक्ल)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी